शिक्षक केन्द्रित विधि है (Teacher centered Method)। इस विधि के अंतर्गत मौखिक रूप से पाठ का वर्णन करना, व्याख्यान करना, पाठ करना या पढ़ना (Recitation) आदि है।

शिक्षक केन्द्रित विधि (teacher centered Method) या मौखिक (oral Method) की विशेषताएँ :-

1. इस विधि में मौखिक रूप से शिक्षक द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण किया जाता है।

2. छात्र सिर्फ ध्यानपूर्वक शिक्षक के भाषण या वाचन को सुनता है, वह कोई प्रश्न नहीं करता है।

3. वाचन की प्रभावशीलता पर पाठ की सफलता निर्भर करती है। अर्थात वाचन जितना प्रभावी होता है, पाठ की सफलता उतनी अधिक मानी जाती है।

4. इस विधि में पठन-पाठन के दरम्यान विषयवस्तु से लेकर पाठ्य सम्पादन तक सभी क्रियाओं का निर्धारण शिक्षक द्वारा होता है। इसीलिए इस विधि को शिक्षक केन्द्रित विधि कहा जाता है।

5. शिक्षक छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों के विकास का कोई अवसर नहीं देते हैं।

6. छात्र स्वयं का विश्व मत (world view) विकसित करने में असफल रहते हैं।

7. इसमें छात्र निष्क्रिय रहते हैं, सिर्फ शिक्षक की क्रियाशीलता देखी जाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि मौखिक रूप से शिक्षक द्वारा ज्ञान का स्थानान्तरण किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Lecture Method व्याख्यान पद्धति →

यह पद्धति बहुत सरल शिक्षण पद्धति मानी जाती है। इस विधि द्वारा थोड़े समय में अधिक विषय को पढ़ाया जा सकता है। पाठ की तैयारी करने में अध्यापक को अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता है। पाठ का प्रतिपादन उदाहरण, दृष्टान्त तथा प्रयोग आदि की सविस्तार व्याख्या द्वारा कर दी जाती है। इसमें प्रयोग, प्रदर्शन करके दिखाने के स्थान पर केवल उनके मौखिक वर्णन से ही काम चला लिया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षक अपने अर्जित ज्ञान के आधार पर व्याख्यान देते हैं तथा विद्यार्थियों की ग्रहण अथवा धारण शक्ति की परीक्षा के लिए उनके द्वारा कुछ प्रश्न कर लिए जाते हैं। उच्च कक्षाओं के शिक्षण में आज भी प्रायः इसी पद्धति का उपयोग किया जाता है।

परन्तु इस पद्धति में अनेक दोष हैं। व्याख्यान विधि में यदि समुचित उदाहरणों का समावेश न हो तो छात्र उस विषय से अभिप्रेरित नहीं होते तथा वे पाठ को सीखने में रुचि नहीं लेते हैं। इसी प्रकार व्याख्यान देने वाला यदि ~~विद्यार्थी~~ विद्यार्थियों की मानसिक प्रगति तथा अवधान का ध्यान नहीं रखता है तो शिक्षण का कोई महत्व नहीं रह जाता है। विद्यार्थी पाठ समझ रहे हैं अथवा नहीं, व्याख्यान रुचिकर है अथवा अरुचिकर इन सब बातों को ध्यान में रखे बिना व्याख्यान देने से शिक्षण का कोई अर्थ नहीं है। बालकों से कोई ज्ञान निकलवाने की अपेक्षा उन्हें बता देना सर्वथा अनुचित और अमनोवैज्ञानिक है। इस विधि की एक दोष यह भी है कि इस विधि के द्वारा पढ़ने से विद्यार्थी श्रोता बनकर चुपचाप सुनते रहते हैं। अतः छात्रों में न तो ज्ञान प्राप्त करने की रुचि उत्पन्न होती है और न ही क्रियाशीलता विकसित होती है। विज्ञान-विषय के लिए यह विधि उपयुक्त नहीं माना जाता है।